

कोयः 1,266, 16. नातिच्छिन्नं नातिभ्रनुभयोर्लक्षणान्वितम् । विषमे व्रण-
मङ्गे यत्तत्तत्तं त्रिभिर्निर्दिशेत् ॥ 2,19, 1. MBh. 3,6096. क्षीणस्याप्यायने दृष्टे
तत्तस्य तत्तोरुक्ताम् 13,5189. MĀLAY. 62. तत्ते प्रकारा निपतत्यभीक्ष्णम्
(sprichwörtlich) PĀṆKAT. II, 193. RAGH. 2,53. काण्डकतत BṬĀG. P. 3,6,31.
नखरुतैः SĀH. D. 44, 11. सर्पतत TRIK. 3,3,427. तता-यङ्ग (die verletzte
Stelle eines Havis, d. i. wo man Etwas davon weggenommen hat) PADDB.
zu KĀTJ. ÇR. 3,3. न प्ररोकति वाक्कतम् PĀṆKAT. III, 112. — Vgl. घतत.

ततकास (तत 2. + कास) m. ein aus Verletzung entstandener Husten
BṬĀVAPR. im ÇKDR. — Vgl. u. ततज, ततोत्य, ततोद्व.

ततघ्न (तत 2. + घ्न) 1) m. N. eines Strauchs, vulg. कुकुरशोखा ÇABDAK.
im ÇKDR. Conyza lacera Burm. WILSON. — 2) f. आ ein best. Insect (s.
लाना) H. 686. ँत्री ÇKDR. und WILS.

ततज (तत 2. + ज) 1) adj. aus Verletzung entstanden u. s. w. z. B.
कास eine bes. Form von Husten SUÇR. 2,503,5. भगद्व 1,267,6. ततस्य
रूक्शोषितनिर्गमाभ्यां तृक्षा चतुर्थी ततजा मता 2,488, 18.6. गुल्म 431,
16. — 2) n. a) Blut AK. 2,6,2, 15. H. 622. MBh. 2,403. R. 2,94,5. 3,
34,28. 6,7,39. 20,10. 28,1,10. 42. SUÇR. 1,303,7. 308,3.5. 2,296,18.
342,12. 382,20. RAGH. 7,40. — b) Eiter ÇABDAK. im ÇKDR.

ततविधसिन् (तत 2. + वि ँ) m. N. einer Pflanze (s. वृद्धद्वर ÇABDAK. im
ÇKDR.

ततव्रण (तत 2. + व्रण) m. eine durch Verletzung entstandene Wunde
BṬĀVAPR. im ÇKDR.

ततकर (तत 2. + कर) n. Aloeholz ÇABDAK. im ÇKDR.

तति (von तन्) f. Verletzung, Beschädigung; Vernichtung, Zugrunde-
richtung; Schaden, Nachtheil: न कृपानां ततिः काचिन्न रयस्य न मातलेः ।
मम चादृश्यत तदा तददुतमिवाभवत् ॥ MBh. 3,12180. कुशेनाभूत्कर्ततिः
KATHĀS. 5,138. न काचस्य कृते ज्ञातु युक्ता मुक्तामणेः ततिः 22,216. विश्र-
ब्ध क्रियतां वराकृततिभिर्मुस्तान्तिः पत्त्वले ÇĀK. 39. असकृद्धतेः निजायाः
ततिः HIT. I,107. मूलानि ततये लुधाम् ÇĀNTIÇ. 2,19. प्रताप° KUMĀRAS.
2,24. मान° RĀGA-TAR. 3,234. एवं विचारतां राशिं न ततिर्जायते क्वचित्
MBh. 4,101. न ततिं लभते क्वचित् 13,5102. जलमुचि वितरणविमुखे का
ततिरस्त्यखिलाम्बुयातृणाम् । केवलधनरसभजी चातकपत्नी कामाग्रयति ॥
UDDBHĀTA im ÇKDR. KĀT. 9 (Gegens. उपचिन्ति). KATHĀS. 2,72. SĀH. D. 25,8.

ततोत्य (तत + उत्त्य) adj. = ततजः कास SUÇR. 2,506, 1. 507, 4.

ततोद्वर (तत + उद्वर) n. Ruhr BṬĀVAPR. im ÇKDR.

ततोद्व (तत + उद्वर) 1) adj. = ततजः कास SUÇR. 2,503,5. — 2) Blut (vgl.
ततज) MBh. 13,2797.

तर्तूर (von तद्) Up. 2,90. तर्तूर und तैतूर (die Texte stets तर्तूर)
ved., तैतूर klass. P. 3,2,135, Vārtt. 5. m. Declin. P. 6,4,11. 1) scissor,
Vorleger (der Speisen), Vertheiler: अस्मिन् तत्ता वामस्य देव भूरैः RV. 6,13,
2. तर्तूरौ ते प्रजायते । ताविका वक्तुं स्यातिम् AV. 3,24,7. नास्य तत्ता
निष्कप्रीवः मूनानामित्ययतः 5,17,14. आर्वितितस्याग्निः तत्ता विश्वे देवाः
सभासदः ÇAT. Br. 13,5,4,6. ÇĀṆKH. ÇR. 16,9,16. — 2) Aufwärter überh.
(= युक्त P. 3,2,135, Vārtt. 5. = नियुक्त H. an. 2,161. MED. L 7), na-
mentlich Thürhüter (AK. 3,4,14, 65. H. 721. H. an. MED.): यत्तत्तार्
ह्यत्या अविपत्येव तत् AV. 9,6,49. VS. 30,13. TBa. 4,7,2,5. ÇAT. Br.
5,3,4,7. 13,5,2,8. KĀTJ. ÇR. 15,3,9. 20,6,18. KĀND. Up. 4,1,5. MBh.
4,2215. fg. — 3) Wagenführer AK. 2,8,2,27. 3,4,14, 65. H. 760. H. an.

2,161. MED. t. 7. VS. 16,26. ÇĀṆKH. ÇR. 16,1,20. Wagenkämpfer (neben
Wagenführer) ÇAT. Br. in Ind. St. 2,36. — 4) der Kshattar gilt für
den Sohn eines Çūdra und einer Frau aus der Kriegerkaste M. 10,12.
13.16.19.26. JĀṆ. 1,94. AK. 3,4,14, 65. H. 897. H. an. तत्तुपुक्रसाना
तु विलोकोवधवन्धनम् M. 10,49. für den Sohn eines Kriegers und einer
Frau aus der vierten Kaste MED. eines Çūdra und einer Frau aus der
dritten Kaste AK. 2,10,3. Up. 2,90. eines Slaven H. an. einer Sla-
vin MED. Vidura, der Sohn Vjāsa's von einer Slavin, so genannt
MBh. 1,7381. 3,246. BṬĀG. P. 3,1,1.3. LIA. I,634. — 5) ein Bein. Brah-
man's H. an. MED. — 6) Fisch UṆĀDIVA. im SĀṆKSHIPTAS. ÇKDR. — Vgl.
अनुततूर.

तर्त्रं n. Up. 4,168. SIDDH. K. 249, b, 2. m. (dieses nicht zu belegen) und
n. gaṇa अर्थर्चादि zu P. 2,4,31. 1) Herrschaft, Obergewalt, Macht, im-
perium; sowohl von menschlicher als göttlicher Herrschaft gebraucht
(namentlich von Varuṇa-Mitra und Indra): राजाना तर्त्रमर्हणीयमा-
ना मरुस्सृष्ट्या विभूयः मरु द्वा RV. 5,62,6. 64,6. 66,2. 67,1. 6,67,5. 4,
24,11. अथैतौ तर्त्रं न कुतश्चिनाधये देवत्वं न चिदाधये 136.1.3. (इन्द्रस्य)
अनु तर्त्रं मरुना मन्यत यौः 4,17,1. 6,25,8. 7,21,7. तस्मिन्तर्त्रममवह्वेष-
मस्तु 5,34,9. दूषाणाम् 7,18,25. अस्मे तर्त्राय वर्चसे वलीय 10,18,9. VS.
9,40. 10,4. 27,4. मयि तर्त्रं मयि धारयतादयिम् AV. 3,3,2. 5,18,4. 7,82,
2. एषा तर्त्रमजरमस्तु जित्नु 3,19,5. 11,7,18. 8,20. ÇAT. Br. 11,4,4,2. 7,11.
अस्मे तर्त्राणि धारयेरन्तु यून RV. 4,4,8. AV. 7,78,2. तव तर्त्राणि वर्धयन्
RV. 8,19,33. 37,7. ÇAT. Br. 2,1,2,18. — 2) Regierung und zwar a) so v. a.
die Herrschenden überh.: तर्त्रं त्रिन्वतमुत् त्रिन्वत् नृन् RV. 8,33,17. य-
युञ्जथे वृषणमग्निना रयं धृतेन नो मधुना तर्त्रमुत्ततम् । अस्माकं ब्रह्म पत-
नासु त्रिन्वत् व्यं धना प्रूरसाता भजेमहि 1,157,2. plur.: वर्धं तर्त्राणामप-
मस्तु राजा AV. 4,22,2 (vgl. aber die v. l. TBa. 2,4,2,7). तर्त्राणां तर्त्रप-
तिरेधि VS. 10,17. तर्त्राणां तर्त्रभूतमो वयोधाः TBa. 2,7,6,3. — b) der
herrschende, fürstliche Stand, dessen Mitglieder in der früheren Sprach-
periode राजन्, später aber nach der Unterscheidung zwischen geistli-
cher und weltlicher Gewalt in ब्रह्मन् und तर्त्र sacerdotium et imperium,
तर्त्रिय heißen. Diese Entgegensetzung in dem bestimmten historischen
Sinne der ersten und zweiten Kaste findet sich nirgends im RV. und
könnte von denjenigen, welche die Zeiten zu verwechseln geneigt sind,
nur in der oben angef. Stelle 1,157,2 gesucht werden. Häufig dagegen
in VS. und AV. यत् ब्रह्मं च तर्त्रं च सम्यज्ञौ चरतः मरु VS. 20,25. 3,27.
14,24. 18,38. 19,5. 30,5 und sonst. वृक्षस्पतिमेव ब्रह्म प्राविशदिन्द्रं त-
र्त्रम् AV. 15,10,3. 2,15,4. 9,7,9. 12,5,8. ब्रह्मण्येव तत्तर्त्रमनुनियुनाति
AIT. Br. 2,33. ब्रह्मतर्त्रे du. 7,19. TS. 1,6,1,2. तर्त्राय च विश्वे च समर्द्धं द-
ध्याम् 2,2,14,2. TBa. 1,1,1,1. ÇAT. Br. 2,1,2,5. 4,12. 5,1,1,11. तस्मा-
डभे ब्रह्म च तर्त्रं च विश्वे प्रतिष्ठिते 11,2,3,16. तर्त्रं वा एष प्रपद्यते यो
राष्ट्रं प्रपद्यते तर्त्रं हि राष्ट्रम् AIT. Br. 7,22,24. In der späteren Sprache
bezeichnet das Wort sowohl die zweite Kaste als auch ein Mitglied der-
selben (H. 863. m. nach TRIK. 2,8,1. f. तर्त्री eine Angehörige der zwei-
ten Kaste H. 898): नाब्रह्म तर्त्रमृणाति नातर्त्रं ब्रह्म वर्धते । ब्रह्म तर्त्रं च
संपुक्तमिह चामुत्र वर्धते ॥ M. 9,322. तर्त्रस्यातिप्रवृद्धस्य ब्राह्मणान्प्रति
सर्वशः । ब्रह्मैव संनियतं स्यात्तर्त्रं हि ब्रह्मसंभवम् ॥ 320.321. यच्च रोषा-
भिन्तेन तर्त्रमुत्सादितं मया MBh. 1,277. समेतं पार्थिवं तर्त्रं काशियुर्यो त-